IJAER/ November-December 2023/Volume-12/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

# माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

**तरूणा शर्मा[1*] डा0सुरक्षा बंसल[2**]**
शोधार्थी [1*] शोध निर्देशिका[2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1, 2,] शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

## सरांश

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित व्यक्ति की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के बीच सन्तुलन बनाए रखता है। सुखी और समृद्ध जीवन जीने के लिए समायोजन एक पूर्व अपेक्षित शर्त है। जीवन के हर क्षेत्र में, जन्म से लेकर मृत्यु तक हमें स्वस्थ समायोजन की आवश्यकता होती है। वर्तमान अध्ययन मेरठ के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। यह अध्ययन मेरठ के सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले 10वीं कक्षा के 200 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर आयोजित किया गया था। ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिंह (1971) द्वारा निर्मित और मानकीकृत समायोजन सूची का उपयोग डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। एकत्रित आंकडों का विश्लेषण 'टी' परीक्षण की सहायता से किया गया। वर्तमान अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि लडकियों का समग्र समायोजन लडकों की तुलना में बेहतर है। लडकियाँ अपने समकक्षों की तुलना में भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक रूप से अधिक समायोजित पाई जाती हैं। शहरी विद्यार्थियों अपने ग्रामीण समकक्षों की तुलना में भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक रूप से अधिक समायोजित पाए जाते हैं।

**कीवर्ड्– समायोजन, भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन।**

## प्रस्तावना–

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति विभिन्न तकनीकों और रणनीतियों का उपयोग करके मास्टर के साथ सामना करने और जीवन की चुनौतियों से पार पाने का प्रयास करता है। यह एक प्रक्रियात्मक व्यवहार है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं और पर्यावरण की बाधाओं के बीच संतुलन बनाए रखता है। समायोजन एक व्यक्ति का उसके नामांकन के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध होगा जो उसे तनाव, तनाव, संघर्ष और हताशा से मुक्त एक आरामदायक जीवन प्रदान करता है।

इस अध्ययन में समायोजन शब्द ज्यादातर उस क्षमता की डिग्री को संदर्भित करता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति आन्तरिक तनाव, संघर्ष, हताशा से निपटने की कोशिश करता है और साथ ही साथ अपनी आन्तरिक मांगों और बाहरी दुनिया द्वारा लगाई गई मांगों (बाहरी मांगों) के बीच समन्वय लाने में सक्षम होता है। एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति वह है जो झगडों, भावनाओं आदि जैसी बातचीत से प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होता है और जिसका व्यक्तित्व विकास समाजीकरण के स्वस्थ पाठ्यक्रम से गुजरता है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समायोजन का मूल्यांकन तब किया जाता है जब किसी व्यक्ति को उसके सांस्कृतिक समूह द्वारा स्वीकार किया जाता है, अर्थात यदि वह अपने समूह के विवादों, रीति–रिवाजों, विचारों आदि के अनुरूप है, यदि वह समूह के रीति–रिवाजों, सम्मेलनों आदि के अनुरूप नहीं है। समूह द्वारा अस्वीकार कर दिया गया और कुसमायोजित माना गया।

मनोविज्ञान ने समायोजन की व्याख्या दो दृष्टिकोणों से की है, एक समायोजन को एक उपलब्धि के रूप में और दूसरा समायोजन को एक प्रक्रिया के रूप में। पहला दृष्टिकोण किसी व्यक्ति की गुणवत्ता या दक्षता पर जोर देता है जहाँ वह विभिन्न परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है और दूसरा उस प्रक्रिया पर जोर देता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने बाहरी वातावरण में समायोजन करता है। समायोजन शब्द का तात्पर्य व्यक्ति और व्यक्ति के पर्यावरण के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध से है। पियाजे ने समायोजन के साधन के रूप में स्वयं या पर्यावरण के विकल्पों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आवास और आत्मसात शब्द का उपयोग किया। समायोजन व्यक्ति का अपने पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध होगा जो उसे आरामदायक जीवन प्रदान करता है।

एक छात्र का समायोजन उसकी आवश्यकताओं और सन्तुष्टि के बीच सन्तुलित स्थिति में पहुँचने से सम्बन्धित है। व्यक्ति की आवश्यकताएँ बहुआयामी होती हैं। विद्यार्थियों को अपने जीवन के सभी पहलुओं में अच्छे समायोजन की आवश्यकता होती है, उनकी शैक्षणिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और अन्य आवश्यकताओं और उनकी संतुष्टि के बीच एक सामंजस्यपूर्ण सन्तुलन। जो स्थिति कुछ बाधाएं पेश करती है, वह व्यक्ति को उन पर काबू पाने के लिए संघर्ष करने पर मजबूर कर देती है। समायोजन प्रक्रिया व्यक्ति के अनुभवों से प्रभावित और संशोधित होती है। व्यक्ति की आवश्यकताओं और उसके वातावरण से बाहर की शक्तियों के बीच निरंतर संघर्ष होता रहता है। इसमें आन्तरिक जरूरतों, रुख और तनाव को कम करना शामिल है। व्यक्तिगत जरूरतें हर व्यक्ति और समय–समय पर अलग–अलग होती हैं। तदनुसार वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वयं को तात्कालिक वातावरण में समायोजित कर लेता है। इससे भावनाओं पर नियंत्रण की कमी हो जाती है और इसके परिणामस्वरूप भावनात्मक अस्थिरता पैदा होती है। पर्याप्त भावनात्मक समायोजन और पर्यावरण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीखने की इच्छा जीवन में मौलिक सफलता है।

एक उपलब्धि या प्रक्रिया के रूप में समायोजन समायोजन की व्याख्या किसी उपलब्धि या उपलब्धि के रूप में प्रक्रिया और उस प्रक्रिया के समाप्त होने के समय दोनों के रूप में की जा सकती है। जब एक गरीब बच्चा सडक की रोशनी में पढता है क्योंकि उसके घर में रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं है, तो उसे समायोजन की प्रक्रिया में कहा जाता है। वह अपनी परीक्षा में सफलता या अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति या अपनी उपलब्धि पर गर्व के संदर्भ में जो हासिल करता है, वह अपने और अपने परिवेश के साथ उसके समायोजन के परिणाम के अलावा कुछ नहीं है। इस प्रकार, उपलब्धि के रूप में समायोजन का अर्थ है कि व्यक्ति किस प्रकार की प्रभावशीलता के साथ बदली हुई परिस्थितियों में कार्य कर सकता है और इस प्रकार, उसकी पर्याप्तता से सम्बन्धित है और एक ऐसी उपलब्धि के रूप में माना जाता है जो या तो बुरी तरह से या अच्छी तरह से पूरी की गई है। एक प्रक्रिया के रूप में समायोजन सफलता और विफलता के संदर्भ में इसके परिणाम के ऐसे समायोजन

की गुणवत्ता का संदर्भ दिए बिना व्यक्ति के स्वयं और उसके पर्यावरण के अनुकूलन के तरीकों और साधनों का वर्णन और व्याख्या करता है। यह केवल यह दर्शाता है कि व्यक्ति या लोगों का समूह बदलती परिस्थितियों में कैसे सामना करता है और कौन से कारक इस समायोजन को प्रभावित करते हैं। यह किसी के जन्म से शुरू होकर उसकी मृत्यु तक बिना रुके चल सकता है। एक व्यक्ति के साथ–साथ उसका वातावरण भी लगातार बदलता रहता है, साथ ही बदलते बाहरी वातावरण की माँगों के अनुसार उसकी जरूरतें भी बदलती रहती हैं। नतीजतन, किसी व्यक्ति के समायोजन की प्रक्रिया की शर्तों में स्थिति से स्थिति में बदलाव की उम्मीद की जा सकती है और एक्रॉन (1982) के अनुसार, संतोषजनक या पूर्ण समायोजन जैसा कुछ भी नहीं है जिसे किसी व्यक्ति के स्वामित्व में हमेशा के लिए हासिल किया जा सके। यह एक ऐसी चीज है जिसे हम लगातार प्राप्त करते हैं और पुनः प्राप्त करते हैं। समायोजन दो तरह की प्रक्रिया है और इसमें न केवल स्वयं को उपलब्ध परिस्थितियों में महसूस करने की प्रक्रिया शामिल है, बल्कि किसी की जरूरत के अनुरूप परिस्थितियों को बदलने की प्रक्रिया भी शामिल है–

'समायोजन की अवधारणा का तात्पर्य व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच निरन्तर बातचीत से है, प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर मांग करता है। कभी–कभी समायोजन तब पूरा होता है जब व्यक्ति झुक जाता है और उन स्थितियों को स्वीकार कर लेता है जिन्हें बदलना उसकी शक्ति से परे है। कभी–कभी यह तब प्राप्त होता है जब वातावरण व्यक्ति की रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देता है। अधिकांश मामलों में समायोजन इन दो चरम सीमाओं के बीच एक समझौता है और कुसमायोजन एक संतोषजनक समझौता प्राप्त करने में विफलता हैं।'

समायोजन के महत्वपूर्ण क्षेत्र इस प्रकार हैं–

- सामाजिक समायोजन
- भावनात्मक समायोजन
- शैक्षिक समायोजन

**<u>सामाजिक समायोजन</u>–**

समाज में दूसरों के साथ समायोजन को सामाजिक बुद्धिमत्ता कहा जाता है। सामाजिक समायोजन व्यक्ति की सामाजिक परिपक्वता से प्रभावित होता है। सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का अर्थ है परिवार, पडोसियों, सहपाठियों, कक्षा–साथियों, शिक्षकों और समाज के सदस्यों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना। सामाजिक समायोजन सामाजिक स्थिति में समायोजन है। यह सभी सामाजिक संस्थाओं में सभी प्रकार की स्थिति और भूमिकाओं में समायोजन है।

**<u>भावनात्मक समायोजन</u>–**

भावनात्मक समायोजन को व्यक्तिगत समायोजन भी कहा जाता है। भावना हमारे भीतर मौजूद ऊर्जा का प्रवाह है। भावना को शरीर में आन्तरिक और बाहरी परिवर्तनों से जुडे एक जीव को उत्तेजित करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हमारी भावनाएँ हमारे व्यवहार को नियन्त्रित करती हैं। भावना जीव में एक गतिशील आन्तरिक समायोजन है जो व्यक्ति की सन्तुष्टि और कल्याण के लिए कार्य करती है। माता–पिता और शिक्षक बच्चे के भावनात्मक समायोजन के लिए अधिक जिम्मेदार हैं।

**शैक्षिक समायोजन**–

शिक्षा आदतों, कौशल और दृष्टिकोण के विकास की एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाती है। शैक्षिक समायोजन से तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति अपनी शिक्षा के प्रति अपने कर्तव्य किस प्रकार निभा रहा है तथा वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है या नहीं। यदि कोई व्यक्ति परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में असमर्थ है, तो उसे उस शैक्षिक माहौल में खुद को समायोजित करने में समस्याओं का सामना करना पडेगा, जबकि जो छात्र परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं, वे अपने शैक्षिक ढांचे में बेहतर समायोजित महसूस करते हैं।

**शोध समस्या कथन**–

**माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक एवं**
**शैक्षिक समायोजन का अध्ययन**

समस्या कथन में प्रयुक्त प्रत्ययों का स्पष्टीकरण निम्न है–

**समायोजन**

व्यक्तित्व, भावात्मक परिपक्वता, सहशैक्षिक समायोजन जो किशोरों की इच्छाओं आवश्यकताओं की पूर्ति एव लक्ष्य प्राप्ति मे सहायक होती है, यदि ऐसी परिस्थिति में किशोर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तो वह विद्यालय या समाज मे समायोजन कर लेता है। यदि उसे सफलता नहीं मिलती है, तो वह विद्यालय और समाज घर सभी स्थानों पर कुसमायोजन करता है। विद्यार्थी जब अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है या फिर स्वयं परिस्थितियों के अनुकूल हो जाता है। वही समायोजन कहलाता है। अतः जब व्यक्ति अपने व्यवहार की गतिषीलता में प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्म–पुष्टि में करता है, तो इसे समायोजन की प्रक्रिया कहा जाता है जो इस प्रकार है–

**गेट्स व अन्य के शब्दों में समायोजन का अर्थ**–

'समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलन सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार मे परिवर्तन करता है।'

**प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य**

अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य तैयार किए गए–

- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ**

- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

**मार्शा, के.पी., (2023) 'छोटे बच्चों वाले परिवारों में तलाक के लिए बच्चे के समायोजन के पारिवारिक और कानूनी संकेतक'** इस अध्ययन में परिवार की गतिशीलता, वकील की भागीदारी और के बीच सम्बन्धों की जांच करने के लिए संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग का उपयोग किया गया। माता–पिता के अलगाव के समय छोटे बच्चों का समायोजन। इस उद्देश्य के लिए 102 गैर–आवासीय पिता और 110 प्राथमिक देखभाल करने वाली माताओं को नमूने के रूप में लिया गया। वे दिखाते हैं कि बच्चे के परिणामों पर माता–पिता के संघर्ष के प्रभाव को पैतृक भागीदारी द्वारा मध्यस्थ किया गया था। माता–पिता–बच्चे का रिश्ता और वकील की भागीदारी। माता–पिता की भागीदारी बच्चों के अनुकूली व्यवहार से सम्बन्धित थी, जबकि माता–पिता–बच्चे के रिश्तों में नकारात्मक बदलावों ने कुछ व्यवहार समस्याओं की भविष्यवाणी की थी। अधिक मनोवैज्ञानिक लक्षण वाली माताओं में वकील का उपयोग करने की संभावना कम थी, जिसके परिणामस्वरूप उनके बच्चे में अधिक आन्तरिक समस्याएं पैदा हुईं।

**जोगसन, वाई.ए. (2022) 'संयुक्त और विभाजित परिवार के छात्रों के बीच असुरक्षा और समायोजन'** वर्तमान शोध का उद्देश्य संयुक्त और विभाजित परिवार के छात्रों के बीच असुरक्षा और समायोजन का पता लगाना था। इसके लिए कुल 320 सैंपल लिंग, निवास और परिवार के प्रकार से सम्बन्धित नमूने लिए गए। बेल समायोजन सूची और डॉ. बीना शाह के असुरक्षा के पैमाने का इस्तेमाल किया गया। आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभावों की जांच करने के लिए एनोवा विधि का उपयोग किया गया था। असुरक्षा और समायोजन के बीच सह–सम्बन्ध की जाँच के लिए कार्ल पियर्सन सह–सम्बन्ध विधि का उपयोग किया गया था। समायोजन में कोई खास अन्तर नहीं देखा गया। असुरक्षा लिंग और क्षेत्र चर के निवास में 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण अन्तर था। 0.63 असुरक्षा और समायोजन के बीच नकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

**सरवैया, आर.वी. (2022) '10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों में समायोजन का एक अध्ययन'** वर्तमान शोध का उद्देश्य 10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों में समायोजन को जानना था। उन्हें 10वीं और 12वीं कक्षा के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। गुजरात के जामनगर शहर के विभिन्न स्कूलों से कुल 120 नमूने लिए गए। डॉ. ऑमण्ड द्वारा बनाई गई समायोजन सूची की सहायता से डेटा एकत्र किया गया, डेटा विश्लेषण के लिए **'टी'** परीक्षण का उपयोग किया गया। परिणाम से पता चलता है कि समायोजन में 10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

**उपाध्याय, एस. और मिश्रा, एस. (2020) 'किशोरों का समायोजन–लिंग की भूमिका और माताओं की कामकाजी स्थिति'** वर्तमान शोध कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के बेटे और बेटियों के समायोजन की तुलना करने का एक प्रयास है। इस प्रयोजन के लिए कुल 400 नमूने लिए गए, जिनमें से 200 (100 लडके और 100 लडकियाँ) कामकाजी माताएँ थीं जो विभिन्न प्रकार की नौकरियों में लगी हुई थीं और 200 (100 लडके और 100 लडकियाँ) 12 से 18 वर्ष की आयु सीमा की गैर–कामकाजी माताएँ थीं। डेटा संग्रह के लिए एम.एस.एल. सक्सेना की समायोजन सूची का उपयोग किया गया

था। परिणामों से पता चलता है कि माताओं की कामकाजी स्थिति में किशोरों के पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन और स्कूल समायोजन स्तर में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। लेकिन लडके और लडकियों जैसे लिंग के बीच कुछ अन्तर महत्वपूर्ण हैं।

**रानी, मीना (2017)** ने **'संयुक्त एवं एकल कुटुंब के किशोरों की समायोजन समस्या पर अध्ययन'** किया। शोध अध्ययन के प्रतिदर्श के लिए इन्होंने हरियाणा के करनाल जिले के कक्षा 9 में पढ़ने वाले 60 विद्यार्थियों का चयन किया। शोध कार्य के आंकड़े संग्रहित करने के लिए ए.के.पी. सिन्हा व आर.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित विद्यालयी बालकों की समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर बताया गया कि संयुक्त कुटुंब व एकल कुटुंब के किशोरों के भावात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा एकल व संयुक्त कुटुंब के किशोरो के सामाजिक समायोजन मे भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अध्ययन के परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि एकल व संयुक्त कुटुंब के किशोरों के शैक्षिक समायोजन में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

शोध अध्ययन विधि से तात्पर्य नवीन वस्तुओं का अन्वेषण तथा पुराने सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण करना जिससे नये तथ्यों की प्राप्ति हो सके। शोध विधि के अर्न्तगत सत्य की खोज या समस्या के कारणों का पता लगाना है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने लक्ष्य को निर्धारित करते हुए **'वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि'** का प्रयोग किया है। यह शोध विधि सबसे उपयुक्त पाई गई।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए मेरठ जिले के 5 माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 10 में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (छात्र 100 और छात्रायें 100) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

शोधार्थी ने डॉ ए0पी0के0 सिन्हा एवं डॉ. आर0 पी0 सिंह निर्मित एवं मानकीकृत समायोजन परीक्षण मापनी का चयन किया गया है।

## शोध परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया गया है।

## शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के सन्दर्भो में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रविधि जैसे– मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

## आंकडों का विष्लेशण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों की साख्यिकीय गणना के पश्चात् निम्नवत् परिणाम प्राप्त हुए है–

**उद्देश्य–1** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

**परिकल्पना–1** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका- 1**

**माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन की तालिका**

| क्रस. | समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 100 | 6.36 | 3.52 | 0.41 | असार्थक |
| 2 | छात्रायें | 100 | 6.56 | 3.40 | | |

टी–मूल्य 0.41 < तालिका मूल्य 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर पर)

तालिका–1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों के भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 6.36 तथा मानक विचलन 3.52 तथा छात्राओं के भावात्मक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 6.56 तथा मानक विचलन 3.40 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी– मूल्य 0.41 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के दोनों स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 198 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं का भावात्मक समायोजन एक समान पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**उद्देश्य–2** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

**परिकल्पना–2** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका- 2**

**माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन की तालिका**

| क्रस. | समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 100 | 5.52 | 2.78 | 1.84 | असार्थक |
| 2 | छात्रायें | 100 | 6.32 | 3.34 | | |

टी–मूल्य 1.84< तालिका मूल्य 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर पर)

तालिका–2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि छात्रों के सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 5.52 तथा मानक विचलन 2.78 तथा छात्राओं के सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 6.32 तथा मानक विचलन 3.34 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी– मूल्य 1.84 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के दोनों स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 198 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक समायोजन एक समान पाया गया। समूहों के भावात्मक समायोजन में समानता पायी गयी।

**उद्देश्य–3** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

**परिकल्पना–3** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

**तालिका- 3**

**माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन की तालिका**

| क्रस. | समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 100 | 6.46 | 2.89 | 3.39 | सार्थक |
| 2 | छात्रायें | 100 | 5.18 | 2.42 | | |

टी–मूल्य 3.39> तालिका मूल्य 1.98 (0.05 सार्थकता स्तर पर)

तालिका–3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 6.46 तथा मानक विचलन 2.89 तथा छात्राओं के शैक्षिक समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान 5.18 तथा मानक विचलन 2.42 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य 3.39 प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के दोनों स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 198 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक समायोजन एक समान नहीं पाया गया। दोनों समूहों के शैक्षिक समायोजन में कोई समानता नहीं पायी गयी।

## अध्ययन के निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में साख्यिकीय गणना के पश्चात् प्राप्त आंकड़ों के निष्कर्ष निम्नवत् है–

1- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

2- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

3- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अंतर है।

## प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षक छात्रों के समायोजन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। छात्रों के भावात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सुधार के लिए वाद–विवाद प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, खेलकूद, योग एवं स्वस्थ समूह गतिविधियाँ, एन. सी.सी. जैसे विभिन्न कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आदि को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गनाई एट. अल. (2013) 'महाविद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एसेज 1(1), 5– 8
2. मोहनराज, लता (2005) 'समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध में पारिवारिक माहौल को समझना' जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइडसाइकोलॉजी, 31, 18–23

3. राजू, एम., रहमतुल्ला (2007) 'स्कूली विद्यार्थियों के बीच समायोजन की समस्याएँ' भारतीय मनोविज्ञान की भारतीय अकादमी का जर्नल, 33(1), 73–7
4. रेड्डी, आई. वी. आर. (1976) 'माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में शैक्षणिक समायोजन–एक अनुदैर्ध्य अध्ययन', पीएच.डी. शिक्षा., एसवीयू.
5. येल्लैया. (2012) 'हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर समायोजन का अध्ययन' इंटरनेशनलजर्नल ऑफ सोशल साइंसेज इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च–1(5)